उथला (उलाहना)
राग मेवाडो

वालैयो वाणी एम उचरेजी, कहे सांभलजो सहु साथ।
पतिव्रता स्त्री जे होय, ते तो नव मूके घर रात।।
रे सखियो सांभलो।। १ ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में वालाजी के सामने जब सब सखियां खड़ी हो गईं तो वालाजी ने जो कहा उसे हे सुन्दरसाथजी! सुनो। हे सखियो! पतिव्रता स्त्री रात को घर नहीं छोड़ती है।

तमे साथ सकल मली सांभलो, हूं वचन कहूं निरधार जी।
तमे वेण मारो श्रवणे सुण्यो, घर मूक्या ऊभा बार जी।। २ ।।

तुम सब साथ मिलकर सुनो ! मैं अच्छी बात बताता हूं। तुमने जैसे ही मेरी बांसुरी के स्वर को सुना तो तुरन्त ही खड़े-खड़े घर को वैसे ही छोड़ दिया।

कुसल छे कांई वृजमां जी, केम आवियो आणी वेर जी।
उतावलियो उजाणियोजी, कांई मूक्या कारज घेर जी।। ३ ।।

सखियों से वालाजी ने पूछा कि ब्रज में सब कुशल मंगल तो है? इस समय आप रात्रि में क्यों आई हो? तुम इतनी तेजी से दौड़कर आई हो, किस कारण से रात को घर छोड़ा?

किहे रे परियाणे तमें निसर्या, कांई जोवा वृन्दावन।
जोयूं वन रलियामणू, कांई तमे थया प्रसन्न।। ४ ।।

क्या सलाह करके घर से निकली हो? क्या वृन्दावन देखने आई हो? क्या मनमोहक वृन्दावन को देखकर प्रसन्न हो गई हो?

हवे पुरे रे पधारो आपणे जी, कांई रजनी ते रूप अंधार।
निसाचारी जीव बोलसे जी, त्यारे थासे भयंकार।। ५ ।।

अब अपने घर वापस लौट जाओ। रात अंधेरी है। जंगल के जानवर रात को बोलेंगे तो तुमको डर लगेगा।

निसाए नारी जे निसरे जी, कांई कुलवंती ते न केहेवाय।
नात परनात जे सांभले जी, कांई चेहरो तेमा थाय।। ६ ।।

जो स्त्री रात को घर छोड़ती है, वह कुलवन्ती (कुलीन) नहीं कहलाती है। सगे सम्बन्धी और दुनियां वाले सुनेंगे तो उनमें तुम्हारी बदनामी होगी।

सखियो तमे तो कांई न विमासियूं जी, एवडी करे कोई वात।
अणजाणे उठी आवियूं जी, कांई सकल मलीने साथ।। ७ ।।

हे सखियो! तुमने कुछ भी विचार नहीं किया, ऐसा कोई करता है? क्या तुम सब अनजाने में (बिना समझे) उठकर आ गई हो?

ससरो सासु मात तातनी जी, कांई तमे लोपी छे लाज।
तमे सरम न आणी केहेनी, तमे ए सूं कीधूं आज।। ८ ।।

सास-ससुर और माता-पिता की लाज (इज्जत) को तुमने मिट्टी में मिला दिया है। तुम्हें किसी की भी शर्म नहीं, यह तुमने आज क्या किया?

Nijanand App

तमे पति तो तमारा ऊभा मूकिया जी, कांई रोता मूक्या बाल।
ए वचन सुणीने विनता टलवली, कांई भोम पडियो तत्काल।। ९ ।।

तुमने अपने पति को खड़े ही (ऐसे ही) छोड़ दिया। बालक भी रोते हुए छोड़े। यह वचन सुनकर सखियों में घबराहट हो गई और वे धरती पर गिर पड़ीं।

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रहियो, कांई दृढ करीने मन।
बाई वांक हसे जो आपणों जी, तो वालोजी कहे छे वचन।। १० ।।

उनमें से कुछ सखियां मन में साहस करके खड़ी रहीं, वह कहने लगीं कि हे बहनो! हमारी कोई गलती होगी जिस कारण वालाजी ऐसे वचन कह रहे हैं।

वचन वाले सामा तामसियो, राजसियो फडकला खाय।
स्वांतसिए बोलाए नहीं, ते तां पडियो भोम मुरछाय।। ११ ।।

तामसियां सामने खड़ी जवाब दे रही हैं। राजसी तड़प रही है। स्वांतसी मूर्च्छित पड़ी है, इसीलिए उनसे बोला नहीं जाता।

एणे समे मही सखी ऊभी रही, कहे सांभलो धणी ना वचन।
सखियो कुलाहल तमे कां करो जी, कांई ऊभा रहो दृढ करी मन।। १२ ।।

इस समय मान वाली सखी श्री इन्द्रावतीजी खड़ी रहीं और सखियों से कहती हैं कि धनी के वचनों को सुनो। शोर क्यों कर रही हो? मन में हौसला करके खड़ी रहो।

सखियो भूला छूं घणवे आपण जी, अने वली कीजे सामा रुदन।
कलहो करो भोमे पडो जी, कां विलखाओ वदन।। १३ ।।

सखियो हमसे अधिक भूल हुई है और फिर सामने रोती हो? झगडा करती हो? धरती पर गिरकर अपने को दुःखी क्यों करती हो?

पिउजी पधारया प्रभातमां, आपण आव्या छूं अत्यारे।
ते पण तेडीने वाले काढियां, नहीं तो निसरता नहीं क्यारे।। १४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी सखियों से कहती हैं कि प्रीतम (प्रियतम) प्रातः (गायें चराने) आये थे। हम अभी आए हैं वह भी (बंसी बजी), नहीं तो कभी भी निकलती नहीं। वालाजी ने बुलाकर निकाला।

पाछल आपण केम रहूं, जो होय कांई वालपण।
केम न खीजे वालैयो, ज्यारे सेवा भूल्यां आपण।। १५ ।।

यदि अपने अन्दर अपने धनी के लिए प्रेम होता तो हम भी पीछे न रहते। जब सेवा में अपने से भूल हुई है तो वालाजी क्यों नाराज न हों?

वालाजी केहेवुं होय ते केहेजो, कांई अमने निसंक।
अमे तम आगल ऊभा छूं, कांई रखे आणो ओसंक।। १६ ।।

अब श्री इन्द्रवतीजी वालाजी से कहती हैं, हे प्रीतम! अब आपको जो कहना है सो निडर होकर कहो। हम आपके सामने सुनने को खड़े हैं। आप कहने में कोई संकोच न करें।

सखियो तम माटे हूं एम कहूं, कांई तमारा जतन।
रखे कोई तमने वांकू कहे, त्यारे दुख धरसो तमे मन।। १७ ।।

अब वालाजी कहते हैं कि यह सब तुम्हारी भलाई के वास्ते ही मैं कहता हूं, ताकि कोई तुमको गलत न कहे। नहीं तो तुम मन में दुःखी होओगी।

NijanandApp

सखियो तमे जेम घर ऊभां मूकियां, तेम माणस न मूके कोय।
एम व्याकुल थई कोई न निसरे, जो गिनान रुदेमां होय।। १८ ।।

हे सखियो! जैसे तुमने घर को खड़े-खड़े छोड़ा है, इस प्रकार से कोई समझदार व्यक्ति नहीं छोड़ता। यदि तुम्हें कुछ भी समझ होती तो इस प्रकार व्याकुल होकर न निकलतीं।

सखियो तमे पाछां वलो, अधखिण म लावो वार।
मनडे तमारे दया नहीं, घेर टलवले छे बाल।। १९ ।।

हे सखियो! अब तुम एक पल की भी देर किए बिना वापस घर चली जाओ। तुम्हारे दिल में दया नहीं है। घर में बालक बिलख रहे हैं।

ए धरम नहीं नारी तणोजी, हूं कहूं छूं वारंवार।
हवे घरडे तमारे सिधाविए जी, घेर वाटडी जुए भरतार।। २० ।।

मैं बार-बार कहता हूं कि यह स्त्रीधर्म नहीं है, अब तुम अपने घर जाओ। तुम्हारे पति तुम्हारी राह देख रहे हैं।

वालैया हजी तमारे केहेवुं छे, के तमे कहीने रह्या एह।
ते सर्वे अमे सांभल्यूं जी, तमे कह्यूं जुगते जेह।। २१ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी वालाजी से कहती हैं कि हे वालाजी! आपने सब कह लिया या कुछ कहने को बाकी है। आपने जो सलाह दी है, वह सब हमने सुन ली है।

सखियो हजी मारे केहेवुं छे, तमे श्रवणा देजो चित।
मरजादा केम मूकिए, आपण चालिए केम अनित।। २२ ।।

वालाजी उत्तर देते हैं कि अभी मुझे और कहना है। तुम ध्यान से सुनो, हम अनुचित काम करके सांसारिक मर्यादा क्यों तोड़ें?

हवे वली कहूं ते सांभलो, कांई मोटूं एक दृष्टांत।
वेद पुराणे जे कह्यूं, कांई तेहेनूं ते कहूं वृतांत।। २३ ।।

अब एक बड़ा दृष्टान्त देकर तुम्हें और कहता हूं, उसे सुनो। वेद-पुराणों में जो कहा है, उस हकीकत को बताता हूं।

भवरोगी होय जनमनो, जो एहेवो होय भरतार।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार।। २४ ।।

यदि पति जन्म से रोगी भी क्यों न हो तो भी कुलवन्ती (कुलीन) नारी उसे भी नहीं छोड़ती।

जो पति होय आंधलो, अने वली जड होय अपार।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार।। २५ ।।

यदि पति अन्धा और मूर्ख भी हो तो भी कुलवन्ती (कुलीन) नारी को उसे नहीं छोड़ना चाहिए।

जो पति होय कोढियो, अने कलहो करे अपार।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार।। २६ ।।

यदि पति कोढ़ी भी हो और क्लेश (झगड़ा) भी करता हो तो भी कुलवन्ती (कुलीन) नारी को उसे नहीं छोड़ना चाहिए।

Nijanand App

जो पति होय अभागियो, अने जनम दलिद्री अपार।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार।। २७ ।।

यदि पति बदनसीब और निकम्मा (आलसी) हो तो भी कुलवन्ती नारी उसे नहीं छोड़ती।

जो पति होय पांगलो, बीजा अवगुण होय अपार।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार।। २८ ।।

यदि पति लंगड़ा हो और उसमें अनेक अवगुण भी हों तो भी कुलवन्ती नारी को उसे नहीं छोड़ना चाहिए।

खोड होय भरतार मां, अने मूरख होय अजाण।
तोहे तेने नव मूकवो, एम कहे छे वेद पुराण।। २९ ।।

यदि पति नपुंसक (हिजड़ा) और मूर्ख हो तो वेद-पुराण कहते हैं कि उसे भी नहीं छोड़ना चाहिए।

ते माटे हूं एम कहूं, जे नव मूकवो पत।
ततखिण तमे पाछा वलो, जो रुदे होय कांई मत।। ३० ।।

इस वास्ते मैं आपसे कहता हूं कि यदि आप के अन्दर बुद्धि है तो तुरन्त घर लौट जाओ और पति को मत छोड़ो।

हवे साथ कहे अमे सांभल्या, कांई तमारा वचन।
हवे अमे कहूं ते सांभलो, कांई दृढ करीने मन।। ३१ ।।

अब सखियां कहती हैं कि हमने आपके वचनों को सुन लिया है। अब हम जो कहती हैं वह ध्यान से सुनो।

पति तो वालैयो अमतणो, अमे ओलखियो निरधार।
वेण सांभलतां तमतणी, अमने खिण नव लागी वार।। ३२ ।।

हमने निश्चित रूप से पहचान लिया है कि हमारे पति आप ही हैं और इसलिए आपकी बांसुरी की आवाज सुनते ही तुरन्त घर छोड़ दिया।

अमे पीहर पख नव ओलखूं, नव जाणूं सासर वेड।
एक जाणूं मारो वालैयो, नव मूकूं तेहेनो केड।। ३३ ।।

हमने न मायके की इज्जत को देखा और न ससुराल की मर्यादा ही देखी। हमने केवल आपको अपना धनी जाना और इसलिए आपका दामन (पीछा) नहीं छोड़ा।

पति तो केमे नव मूकवो, तमे अति घणूं कह्यूं रे अपार।
तमे साख पुरावी वेदनी, त्यारे केम मूकूं आधार।। ३४ ।।

आपने बहुत तरह से समझाकर पति को न छोड़ने की सलाह दी और वेद-पुराण की गवाही भी दी, तो मैं पति को कैसे छोड़ूं?

तमे कह्यूं पति नव मूकवो, जो अवगुण होय रे अपार।
तमे रे तमारे मोहें कह्युं, तमे न्याय रे कीधो निरधार।। ३५ ।।

हे वालाजी! आपने कहा कि चाहे पति में कितने ही अवगुण हों उसे छोड़ना नहीं चाहिए। आपने स्वयं ही अपने मुख से कहकर फैसला कर दिया है।

Nijanand App

अवगुण पति नव मूकवो, तो गुण धणी मूकिए केम जी।
तममां अवगुण किहां छे, तमे कां कहो अमने एम जी।। ३६ ।।

जब अवगुणों से भरे पति को नहीं छोड़ना है तो गुणवान पति को कैसे छोड़ें? आपमें अवगुण कहां हैं? इसलिए आप हमको ऐसा क्यों कहते हो?

एवा हलवा बोल न बोलिए, हूं वारू छू तमने।
ए वचन केहेवा नव घटे, कांई एम केहेवुं अमने।। ३७ ।।

हे वालाजी! मैं आपको मना करती हूं कि ऐसे हल्के वचन न बोलें, हमारे लिए ऐसे वचन कहना आपको शोभा नहीं देता।

अमे तो आव्या आनंद भरे, कांई तमसुं रमवा रात जी।
एवा बोल न बोलिए, अमने दुख लागे निघात जी।। ३८ ।।

हम तो हृदय में उमंग लेकर रात्रि में आपके साथ खेलने के वास्ते आए थे। आप ऐसे वचन न बोलें। हमें दुःख लगता है और ऐसे वचन सहन नहीं होते हैं।

अमे किहां रे पाछां वली जाइए, अमने नथी बीजो कोई ठाम जी।
कहो जी अवगुण अमतणां, तमे कां कहो अमने एम जी।। ३९।।

अब हम लौटकर वापस कहां जाएं? आपके बिना हमारा अब ठिकाना कहां है? आप कृपया हमारे अवगुण बताइए। हमको आप ऐसा क्यों कहते हैं?

अमे तम विना नव ओलखूं, बीजा संसार केरा सूल जी।
चरणे तमारे वालैया, कांई अमारा छे मूलजी।। ४० ।।

हम आपके बिना और किसी को नहीं जानते। आपके बिना बाकी सब संसार दुःखदायी है। हे धनी! आपके चरणों में ही हमारा मूल ठिकाना है।

फल रोप्यो आंबो तमतणो, वाड कांटा कुटंम पाखल।
बीजो झांपो रखोपुं करे, कांई स्यो रे सनमंध तेसुं फल।। ४१ ।।

आपने ही आम का पेड़ लगाया है। बाद में चारों ओर कुटुम्ब कबीले रूपी बाड़ लगाई जो केवल रक्षा करने के वास्ते है। उनका फल से भला क्या सम्बन्ध (मतलब)?

फूल फूल्या जेम वेलडी, ते तां विकसे सदा रे सनेह।
वछूटे ज्यारे वेलथी, त्यारे ततखिण सूके तेह।। ४२ ।।

जिस प्रकार बेल में लगा हुआ फूल ही सदा खिलता रहता है और बेल से अलग होते ही तुरन्त सूख जाता है।

जीव अमारा तम कने, कांई चरणे वलगां एम।
फूल तणी गत जाणजो, ते अलगां थाय केम।। ४३ ।।

आपके चरण रूपी बेल से हमारा फूल रूपी जीव बंधा हुआ है। हमारी भी हालत फूल के समान जानो। यह कैसे अलग हो सकता है?

Nijanand App

तेम जीव अमारा बांधिया, जेम पडिया मांहें जाल।
खिण एक सांमू नव जुओ, तो पिंडडा पडे तत्काल।।४४।।

उसी तरह से हमारा जीव आपके चरणों के जाल (बेल) से बंधा है (लिपटा है)। एक पल के लिए भी यदि आप हमारी आंखों से ओझल होते हो तो हमारे शरीर गिर जाएंगे।

जीव अमारा चरणे तमतणे, ते अलगां थाय केम।
जल मांहें जीव जे रहे, कांई मीन केरा वली जेम।।४५।।

हे वालाजी! हमारे जीव आपके चरणों में हैं? वह अलग कैसे हो सकते हैं? जैसे जल में रहने वाली मछली जल से जुदा नहीं हो सकती, उसी प्रकार हम आपके चरणों से जुदा नहीं हो सकते।

वाला तमे अमसूं एम कां करो, अमे वचन सह्या नव जाय।
खिण एक सामूं नव जुओ, तो तरत अदृष्ट देह थाय।।४६।।

हे मेरे वालाजी! आप हमसे ऐसा क्यों कहते हो? हमसे आपके यह वचन सहन नहीं होते। एक पल के लिए भी यदि आप न दीखो तो शरीर नष्ट हो जाएंगे।

निखर अमारी आतमा, अने निठुर अमारा मन।
कठण एवां तमतणां, अमे तो रे सह्यां वचन।।४७।।

आत्मा हमारी कठोर है और मन हमारा अति ढीठ है जो हमने आपके इतने कठोर वचनों को सुन लिया।

अम मांहें कांई अमपणूं, जो होसे आ वार।
तो वचन एवां तमतणां, अमे नहीं रे सांभलूं निरधार।।४८।।

यदि इस समय हमारे अन्दर कुछ भी स्वाभिमान (अपनापन) होता तो आपके ऐसे वचन कभी न सुनते।

सखिएं मनमां वचन विचारियां, कांई प्रेम वाध्यो अपार।
जोगमाया अति जोर थई, कांई पाछी पडियो तत्काल।।४९।।

सखियों के मन में जैसे ही यह विचार आया तो प्रेम अत्यधिक बढ़ गया और अन्दर जोश आया एवं तुरन्त नीचे गिर गईं।

ततखिण वाले उठाडियो, कांई आवीने लीधी अंग।
आनंद अति वधारियो, कांई सोकनो कीधो भंग।।५०।।

तुरन्त ही वालाजी ने आकर उन्हें उठाया और गले से लगा लिया। उनके दुःख दूर कर दिये जिससे आनन्द बढ़ गया।

वालोजी कहे छे वातडी, तमे सांभलजो सहु कोय।
में जोयूं तमारूं पारखूं, रखे लेस मायानो होय।।५१।।

वालाजी अब कहते हैं कि हे सखियो! तुम सब सुनो यह तो मैंने आपकी परीक्षा ली थी कि आपके मन में माया की थोड़ी सी भी चाह बाकी तो नहीं है?

ओसीकल वचन वाले कह्या, कांई ते में न कहेवाय।
सुकजीए निरधारियूं छे, पण ते में लख्यूं न जाय।।५२।।

वालाजी ने शर्मिन्दा करने वाले ऐसे वचन कहे जिनको कि मैं कह नहीं सकती। शुकदेव जी ने तो कुछ लिखा भी है, परन्तु मैं तो लिख भी नहीं सकती।

Nijanand App

ए वचन श्रवणे सुणी, कांई मनडां थयां अति भंग।
वाला एम तमे अमने कां कहो, अमे नहीं रे खमाय अंग।।५३ ।।

ऐसे प्यार-लाड के वचन सुनकर सखियों के दुःख से भरे मन को शान्ति मिली। वह बोलीं कि हे वालाजी! आप हमसे ऐसा क्यों कहते हो? हममें सहन करने की शक्ति नहीं है।

कलकलती कंपमान थैयो, कांई ततखिण पडियो तेह।
आवीने उछरंगे लीधियो, कांई तरत वाध्यो सनेह।।५४ ।।

बिलखती हुई, कांपती हुई सखियां फिर से गिर पड़ीं और फिर वालाजी ने उन्हें प्यार से उठाया जिससे प्यार और बढ़ गया।

आंखडिए आंसू ढालियां, तमे कां करो चितनो भंग।
आंसूडां लोऊं तमतणां, आपण करसूं अति घणू रंग।।५५ ।।

सखियों की आंखों से आंसू बहते हैं। वालाजी उन आंसुओं को पोंछते हैं और कहते हैं कि तुम इतना दुःखी क्यों हो रही हो? अभी हम आनन्द की लीला करेंगे।

सखियो पूरूं मनोरथ तमतणां, कांई करसूं ते रंग विलास।
करवा रामत अति घणी, में जोयूं मायानो पास।।५६ ।।

वालाजी सखियों से कहते हैं कि हम तुम्हारी मनोकामना पूरी करेंगे और अति आनन्द की लीला करेंगे। आनन्द की रामत खेलने के लिए ही मैंने देखा था कि तुम्हारे अन्दर माया है या नहीं।

सखियो वृन्दावन देखाडूं तमने, चालो रंग भर रमिए रास।
विविध पेरेनी रामतो, आपण करसूं माहों मांहें हांस।।५७ ।।

हे सखियो! चलो वृन्दावन दिखावें और आनन्द भरी रास की रामतें खेलें। तरह-तरह की रामतें खेलकर हम आपस में हंसेंगे।

तमे प्राणपे मूने वालियो, जेम कहो करूं हूं तेम।
रखे कोई मनमां दुख करो, कांई तमे मारा जीवन।।५८ ।।

वालाजी कहते हैं, सखियो! तुम मुझे प्राणों से भी प्यारी हो। तुम जैसा कहो मैं वैसा करूं। मन में किसी प्रकार का दुःख मत लाओ। तुम तो मेरे जीवन हो।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ३७५ ।।

वृंदावनदेखाड्यूं छे

राग धनाश्री

जीवन सखी वृंदावन रंग जोइएजी, जोइए अनेक रंग अपार।
विगते वन देखाडूं तमने, मारा सुन्दरसाथ आधार।।१ ।।

वालाजी कहते हैं, सखी! चलो वृन्दावन देखें और आनन्द का अनुभव करें। तुमको अच्छी तरह से वन की सैर कराता हूं। तुम मेरे प्राणों के आधार सुन्दरसाथ हो।

आंबा आंबलियो ने आसोपालव, अंजीर ने अखोड।
अननास ने आंबलियो दीसे, चारोली चंपा छोड।।२ ।।

आम, इमली, अशोक, अंजीर, अखरोट, अन्नानास, चारोली (चिरोंजी) और चम्पा के पेड़ देखो।

Nijanand App